ओं

भूमिका काश्मीरी भाषा में

दिलस अन्दर युहय वुथ म्य खयाला,
ब वनहा पीर सॉबुन पूर हाला ।
कशीरे मजं यहोंय सतं द्राव मशहूर ।।
कमालात तिथ करिन गय लूक मशकूर ।।
तपस्या तिछ कठिन कंरिथ बन्योस ज्ञान ।।
मनुष्य कया देवता आंसिस करान मान ।।
मगुंस यिम यी दिवान ओसुस ब यकदम ।
तिंमय कथं वारं हिन्दियस मन्ज़ म्य लेछम ।।
असिन्द हालात कंरि वरनन म्य सांरी ।
यि केन्ह डयूठूम त बूतुम कन दांर दांरी ।।
यिथिस संतस भविन जय जय नमस्कार ।
म्य दीतन यथ अगादस भवसरस तार ।।
परन यिम यथ कर्यख दीवी दया पूर ।
चलयख दुख तय बन्यख सुखं बेयि अछन नूर ।।
बुठान सांहिब दिलां हरकस ब यांरी ।।
दया दृष्टी मंगान दिलबर बज़ांरी ।।

दिलबर काशमीरी
आर-- एन-- दर

पीर साहिब का शुभ जन्म

श्रीनगार स्थित बटयार में एक धनाढ्य मनुष्य गोविन्द जू नामक हो गुज़रे हैं, ससांरिक उपद्रवोंके कारण वह घंर में अकेले ही रह गए थे । कई प्रत्यनों के करने पर भी वह पचास वर्ष की आयु तक कुवांरा ही रह गया था अन्त मैं एक समय वृदू स्त्री इसके घर पर इसी सम्बन्ध में आई गोविन्द जू ने उसका यथा योज्य सम्मान किया, नकद तथा जिन्स देकर भी उसे प्रसन्न किया । वृद्ध स्त्री ने इसका यह व्यवहार देखकर उसे यह प्रण किया कि उसका (गोविन्द जू) का विवाह सम्भव हो सकता है तथा यह आश्वासन देकर वह वहां से विदा हुई ।

प्रण को पूरा करने के लिए वृद स्त्री इधर उधर प्रबन्द करते करते गुशी नामक ग्राम में पहूंच गई । वहां अपनी चतुरता से एक विधवा के घर गोविन्दजू का ब्याह निश्चित किया । अपनी सफलता से प्रसन्न होकर वह गोविन्द जू के घर आई और उसे सफलता का समाचार कह सुनाया । अब विवाह का प्रबन्ध होने लगा। निश्चित दिन पर गोविन्द जू ने दूल्हा बनकर बरातियों के समेत सोपोर की ओर प्रस्थान किया । वहां विधवा सास दूल्हा को काफी आयु का देखकर चिन्न्तित हो गई और सम्बन्ध कराने वाली वृद्ध स्त्री को भी जली कटी सूनाई । किन्तु अन्त में कई सज्जनों के ढासस बधाने पर कि यह ईश्वर की करनी है । उसे राज़ी करा लिया तथा शुभ कार्य पूर्ण किया । दोनों दुल्हा दुल्हन अब बरातियों समेत श्रीनगर लौट आए । वृद्ध स्त्री ने खूब पुरस्कार प्राप्त किया तथा गोबिन्द जू के घर खुशियां मनाई जाने लगी । प्रत्येक ओर से बधाई सन्देश मिलने लगे, परन्तु दुल्हन की माता फिर भी चिन्ताग्रस्त थी । दामाद को बडी आयुध्यान में रख कर लडकी के सन्तान उत्पति की । उस उस भावना इसे विशेष कर चिन्ता में डुबाये रखती थी । इसलिए अब वह साधुओं सन्तों तथा परम तीर्थों का सहारा लेकर दौड धूप करने लगी । दैव की लिला निराली होती है । इस बारे में भी दो विचार धाराएं सुनने में आई हैं । कहते हैं कि गुशी ग्राम में एक चश्मा था लडकी की माता प्रायः वहां जाया करती थी और वहां अपनी लडकी के गर्भाधान के लिए प्रार्थना करती थी इस प्रकार कुछ समय बीतने के पश्चात उसको स्वप्न में लडकी गर्भाधान देने का आश्वासन दिया गया ।

2. यह भी कहा जाता है कि शारदा, देवी हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थ है। जहाँ पर प्रत्येक वर्ष यज्ञ रचाया जाता है । विधवा माता अपनी लडकी को इसी तीर्थ पर ले गई वहां पर फिर यह आकाशवाणी होती है कि तुम्हारी लडकी को पुत्र होगा ।

खैर लडकी अब गर्भवती रहती है तथा उसकी विधवा माता हर्षिता होती है । वह शुभ दिन पर सामाजिक रीति अनुसार लड़की को ससुराल भेजती है । समय आ चुका था इस कारण सोपोर पहुंच कर ही उसे प्रसव पीडा हुई । परिणाम स्वरूप नाव में

ही एक सुपुत्र जन्म लेता है ।

सोपोर में एक मस्त योगी का प्रकट होना

सोपोर में रात के समय एक मस्ताना जोगी अकस्मात जाग पडा तथा शिष्यों से बोला कि काश्मीर में द्वितय सूर्य चमक उठा है, जरा बाहर जाकर देखो कि किसके घर सुपुत्र ने जन्म लिया है । रात काफी अन्धेरी थी । इधर उधर पूछ ताछ की गई परन्तु कुछ पता न चला अन्त में जोगी स्वंय ही बाहर निकल आया और पता चला कि नाव में किसी पण्डित स्त्री ने ऐसें लडके को जन्म दिया है । योगी वहाँ गया सलाम बजा दी, सोने के दो पौंड उसने बच्चे के हाथा में उपहार के रूप में रखदिये । योगी ने बच्चे की माता को धीरज दिया तथा बच्चे का ठीक ठीक पालन करने का उपदेश दिया । योगी दर्शन करके चले गए । फिर दूसरे दिन श्रीनगर पहुंच गये । घर पहुँचने पर सब हर्षित हो गए ।

किसी कवि ने इस सम्बन्ध में लिखे शब्द सत्य ही कहे है ।

चूँ पिदर पीरान सरउद जवानी ताज़करद
दर सरे फ़रूख पिसर तारीफ बेअन्दाज करद ।
बाग्य गुलशान अज़ सबा सरसबज़ शुद्ध फिरदौस वार
गशत हर सहन चमन चूँ सफाए रंगीन निगार ।

बूढे पिता को इस अवस्था में पुत्र की प्राप्ति से नया यौवन मिला और अपने पुत्र की प्रशंसा करने लगा उसके पुष्पों का चमन स्वर्ग लोक के समान हरा भरा होने लगा । उसके सहन की हर फुलवाडी फूलों से सुगन्धित हो उठी ।

शुभ जन्म

आपका शुभ जन्म वैशाख पचंमी कृष्ण पक्ष 1637 ईस्वी में हुआ । ब्राह्मन ने जन्म पत्री बनाई और फिर आपके सन्तों तुल्य चिन्ह बताये । आपका घर बधाई के शब्दों से गूँज उठा । परन्तु आपने माता का दूध पीने से इन्कार किया । माता के इस बारे में सभी प्रयत्न निष्फल हुए । इन्ही दिनों साहिब कोल नामक एक महात्मा हब्बा-कदल में बिराजमास थे । माता आपको उसी के पास ले गई । और उसको सारा वृतान्त कह सुनाया । साहिब कोल ने जब आप के चिन्ह और गुण सन्तों जैसे देखे तो वह बहत प्रसन्न हुए तथा आपकी ओर यूँ कह बैठे " जब जन्म लेने में नही शरमाये तो नोष में क्या दोष पाय यह शब्द सुनकर आपने दूध पीना शुरू किया । सभी प्रसन्न हुए और साहिब कोल ने आपके (पीर साहिब) के सम्बन्ध में निम्नलिखित भविष्यवानी की :-

फारसी में

मालिके मुल्क व कज़ा व मालिके राहे कदर
जल वह आरा शुद दु अवतारां व मुल्के काश्मर ।
बादशाहेहरदू आलम शहरयारे बहर व बर
कदरश ता कुदरत ईश्वर बूद नज़दीक तर ।

साहिब कोल का कहना है कि पीर साहिब बडे तपस्वी होकर पृथ्वी और सागर का राज्य पद प्राप्त करेगा । और उसकी मान्यता देवाताओं से कम नहीं होगी । इसको महान योगेश्वर कापद प्राप्त होगा और कश्मीर में धर्म अवतार माना जायेगा ।

पीर साहिब का यज्ञोपवीत तथा शिक्षा

आपकी बालावस्था आपके माता प्र पिता के लिए अपरिमित हर्ष प्रधान करती थी। वृद्द पिता को समझो नया यौवन मिला । नानी को जिसने काफी कष्ट सह लिए थे विशेषकर आप की यह अवस्था नेत्रज्योति से अधिक प्रिय थी । इस प्रकार से आपका पालन पोषण बडे लाड प्यार से हुआ ।

आपका जातकरण और नामकरण संस्कार बडी धूम धाम से मनाया गया भोजन दिए गए, फिर पांच वर्ष की आयु में आपका यज्ञोपवीत संस्कार भी समाज रीति के अनुसार कियागया । धूमधाम में कोई कसर न रखी गई । इसके बाद आपको शिक्षा प्राप्ति के लिए पाठशाला भेजा गया । वहां आप अपनी तीव बुद्धि और योग्यता से सब से बाज़ी ले गए । साथ साथ आपका मन भक्ति मार्ग की ओर भी लगा रहता था जिस कारण से आपने आगे पढने से मुःहं मोडा । कुछ समय के उपरान्त आपका विवाह भी काफी शान से किया गया ।

क्यों कि बचपन से ही आप त्याग मूर्ति थे और मन ईश्वर भक्ति की ओर ही लगा रहता था । आप भी अपने माता पिता के साथ हारी पर्वत का परिक्रमा के लिए जाने लगे । जो उन दिनों प्राय; वहां जाया ही करते थे । आप वहां देवी स्तुति और पूजा पाठ की तरफ अपनी श्रद्धा दूसरों से बडचड कर दिखाने लगे ।

तपस्या का आरम्भ

कुछ समय इसी तरह व्यतीत हुआ । एक दिन देवी आगंन में दो भक्त श्री नान शाह और आत्मराम से आपका परिचय हुआ और वे आपके सेवक बन गए । अब से आप इन के संग ही प्रतिदिन परिक्रमा को जाने लगे और आश्रम देवी आगंन में बनाया । घर पर आपके पिताजी को घर का निर्वाह चलाने की धुन लगी थी इस कारण वह आपकी रूचि भी इसी और बढाना चाहता था, परन्तु आपकी रूचि इसके विपरीत थी, आप त्याग मूर्ति थे । इसलिए पिता जी के सारे यत्न व्यर्थ ही प्रमाणित हुए, यहां तकिक फिर वह

स्वर्ग को सिधार गए । अब आपकी माता की परेशानी और भी बड गई किन्तु आपकी स्वतन्त्रता में और अधिकता ही आ गई । अब आप प्रायः दो सेवकों के संग देवी आगंन में ही समय बिताने लगे । आपकी माता नें यह देख कर अपने भ्राता को बुला भेजा ।

जब वह आपके घर आया । उसने आप का व्यवहार अच्छी तरह भांप लिया और फल स्वरूप आपको अपने गुशी ग्राम लेने पर विवश हुआ । वहां पर एक योग्य अध्यापक को आपके पढाने के लिए निश्चित किया ताकि शिक्षा जारी रहे परन्तु समझा बुझाकार भी आप पर कोई प्रभावित न हुआ । इस समय के बीच आपको एक बार मस्जिद में इस विचार से बन्द रखा गया, कि शायद आप इस तरह ससांरिक व्यवहार में सोच लेगें परन्तु निरर्थक । इधर से आपके दो सेवक आत्माराम और नानशाह आपको श्रीनगर में ढूढ़ंते रहें और अन्त में पता लगने पर गुशी ग्राम पहुचें गए । जां उन्होंने आपको मस्जीद में बन्दपाया । आपने उनको ताला खोलने का ढगं बताया और दरवाजा खोलने पर आप बाहर आए । फिर आप तीनों श्रीनगर की ओर चल पडे । रास्ते में किसी रिश्तेदार के हां से एक भात से भरा देगचा उठाके साथ लाए । और पलहालन स्थान पर भोजन पा लिया । इस दीगचे को फिर आध्यात्मिक पूर्तिक से लौटा दिया ।

दूसरे दिन श्रीनगर पहुंच करदेवी आगंन में दम लिया । आपकी माता को जब यह सब मालूम हुआ तो उसने आपको घर लोटने पर विवश किया । आपने आज्ञा पालन किया, और इस प्रकार आपके दो सेवक आपसे बिछड गए फिर आपने चालीस दिन निरन्तर घुठनों के बल परिक्रमा करने की ने केवल प्रतिज्ञा ही की, अपितु सफलता पूर्वक इसे पूर्ण भी किया , फल स्वरूप जगतअम्बा ने आपको दर्शन देकर कृतार्थ किया और साथ में इस प्रकार कहा ।

श्री ईश्वरी बोली ए दिल पज़ीर
बता दे ब जल्दी मुरादे ज़मीर ,
तेरी इस इबादत से हई शाद तर
अभी से हो तेरा हाल आबाद तर ।

अर्थ में तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हुई इसलिए तुम अपना मनोरथ प्रकट कर आपने ससांरिक ठाठ बाठ को तुच्छ समझा कर केवल गुरू उपदेश की कृपा याचना की । यह आपकी अगाध ईश्वर भत्कि का प्रभाव है । इस पर जगत माता ने फिर यूं उतर दिया कि अच्छा ! जो मनुष्य आपको पहले मिलेगा वही आपका गुरू होगा । यह कह कर परमेश्वरी अदृश्य हो गई ।

थोडी ही दूर चलकर हारी पर्वत मन्दिर के सामने कृश्णकार नामक एक मस्ताना एक चट्टान पर दिखाई दिया आपने इसकी ओर ध्यान न दिया और आगे चलते रहे, परन्तु मस्ताना ने बुलाया और उपदेश की ओर स्मरण कराया। आपने उत्तर दिया, कि मर्यादा के अनुसार ब्राह्मण स्वरूप का उपदेश चाहिए । वास्तव में आपके उसके चमत्कारों को पहचान न सके और आगे बढे, किन्तु जगत अम्बा के दरबार से उपदेश देने के लिए कृष्णकार को आदेश मिल चुका था । इसलिए कृष्णकार तुरन्त ही आपके घर पहुँचे और आपकी माता से आपका हुक्का माँग लिया । चिल्लम का एक कश लगाया और आपकी माता से कहा कि पीर साहिब के सिवाय इसे और कोई पीने न पाए । यह कह कर वह चल पडे । इतने में आप घर पहुँच गए और माता से यह प्रश्न किया कि यहाँ कोई आया तो नही था माता ने मस्ताने का सारा हाल कह सुनाया । आप अब समझ गए कि ईश्वर की इच्छा यही है । चिल्लम के दो कश लगाए और आपको ज्ञान प्राप्त हुआ । यहाँ पर एक और विचार धारा है । कि जब आप मस्ताने के पास पहुँचे तो उन्होंने परीक्षा के लिए आप से आग बनावाई और आपसे बोले कि बस्ता लाओ । बस्ता लाने पर उसने इस में से कुत्ते का बच्चा निकाला तथा उस को आग में भुन्ने की आपको आज्ञा दी ताकि

नाश्ता किया जाए । यह आश्चर्य जनक हालात देखकर आपका दिल चकित हुआ । परन्तु विवशता के कारण चुप रहे । बडी कठिनता से जीते जानवर को आग में तैयार किया । उसके पश्चात कार साहिब ने कहा कि नाश्ता लाओ आग में देखा तो कुछ न पाया तो आप बडे आश्चर्य में पड गए । फिर कार साहिब ने कहा कि अच्छा अब बस्ता खोलो आपने जानवर (कुत्ता) को उसी में जीवित देखा । आपने मन में मस्ताना योगी की अध्यात्मिक शक्ति का रहस्य खुल गया और उसको सरहाने लगे अब कार साहिब

यहाँ से सीधे चल दिए और आपके घर पहुँच कर आपको उपदेश दिया ।

तपस्या का पला दौर

इसके बाद आपने माता जी से संसार को त्यागने तथा तपस्या में जीवन बिताने की आज्ञा माँगनी चाही माता दिल के टुकडे सन्तान की जुदाई कब सहन करती है । काफी बहस हुई अन्त में निश्चित हुआ कि आप अपनी कुटिया में ही तपस्या करें । आपने रात दिन तन मन से ऐसी तपस्या आरम्भी की, कि कहा जाता है कि कई बार आग के अंगारे अपने शरीर पर डालते थे । इस तरह से शरीर में बडे घाव पड गए और कीडे उत्पन्न हुए । आपको तो सैकडों सेवक बन गए थे उन सेवकों ने आपके शरीर से कीडे उठाने की याचना की किन्तु आपने रोक लिया उनके हठ करने पर आपने यह उत्तर दिया कि यह सब गुरू द्रोह का दण्ड है । आपकी सेवा सेवकों के अतिरिक्त माता भी

अपनी ओर से करती रही यद्यपि सेवा में कोई कमी नही रखते थे । कठिन तपस्या करते करते इस प्रकार ।4 ई साढे चौदहई वर्ष बीत गए । परन्तु आपका शरीर ज्यों का त्यों रहा और उज्जवल सूर्य की तरह चमकने लगा । आपकी मान्यता अब उच्चकोटि के सिद्धि-युक्त सन्तों में होने लगी , और आपने अपना भोडा ई चढावाई नियाज ।4$^1/_2$ पूछे. ई पैसेई निश्चित रखा । सेवकों की गिनती ई ।200 बारह सौंई तक पहुंच गई । लोग जोक दर जोक ई समूहई दर्शनों के लिए आने लगे और निश्चित चढावा भी चढाते रहे यहां तक कि साधुओं से भी चढावा लेते रहे । आपके दरबार में सब का मनोरथ पूर्ण होता था । लगातार तपस्या करने के कारर्ण आपकी टागें निर्बल होचुकी थी । इसलिए सेवकों ने आपके लिए एक पालकी बनवाई थी जिस में बैठकर आप सैर को जाया करते थे ।

मीशा साहिब की जन्म कथा

किश्तवाड इलाके के परगना परवली नाम के गांव में निरंजन नामक एक व्यवसायक हो गुज़रा है । इसके घर में कोई सन्तान न था वह काफी प्रभावशाली दुकानदार तथा साधु सेवक था । एक दिन उसके दुकान पर कोई साधु आया । निरंजन ने इसकी अच्छी सेवा की और अपने मनकी इच्छा भी प्रकट की । साधु महाराज इसकी सेवा से प्रसन्न हुए थे । इसलिए उसने निरजंन के प्रश्नका इस प्रकार उत्तर दिया कि यहां निकट ही एक वन में नानकशाह नामक साधु तपस्या करता है । उसको प्रसन्न करने से ही आपका मनोरथ सिद्ध होगा । साधु सेवक निरजंन ने ऐसा ही किया जिसके परिणम स्वरूप उसको सन्तान की प्राप्ति हुई । दोनों पति पत्नी अत्यन्त प्रसन्न हुए । किन्तु र्दुभाग्यवश दोनों के भाग्य में सन्तान का सुख लिखा न था । दोनों एक दुसरे के बाद स्वर्ग वास हूए । अब यह अनाथ बच्चा नि:सहाय होकर रोटी के लिए मोहताज हो गया प्रकृति के खेल निराले । कि वही नानक शाह साधु वहां प्रकट हुआ । उस ने बालक की दशा को देखकर इसे परवली गांव के एक जमींदार के पास रखा । अनाथ बच्चा अब जमींदार के घर ही पाला पोसा गया ।

बच्चा अब दूध पीने लगा परन्तु इसका जातिकर्म, नामकर्ण, सस्कोर नही किया गया क्योंकि जमींदार इसे मियांशाह जाति से सम्बन्ध रखता था वैसे जमींदार इसे मियांशाह के नाम से पुकारने नगा तथा उसको अपने बेटे की तरह पालता रहा बडते बडते लडका ।5 बर्ष का हो गया और फिर जमींदारी करने लगा जमींदारी के साथा साथ लडका अध्यात्मिा कार्य भी गुप्त रीति से करता रहा । ऐसा प्रतीत होता है कि नानक शाह साधु इसको उपदेश देचुका था

जब यह नियम अनुसर अपना कार्य करता रहा, सयोंग की बात है । कि लालकार

जो रैणवारी श्रीनगर का एक बडा व्यापारी था व्यापार के सम्बन्द में किश्तवाड (पखली) इसी जमींदार से मिलने के लिए गांव में पुहुंचा । क्यों कि इनका पारस्परिक व्यवसाय सम्बन्धी लेन देन भी था । गांव में चलते चलते लालाकार क्या अचम्बा देखता हैं कि एक खेत में एक कव्वा बैलों की हांक रहा था तथा कुछ दूर एक युवक बैठकर अपने पुराने कपडे काट रहा था । जब इस युवक की द्रष्टि जो पण्डित जी (लालाकार) पर पडी तो शीघ्र ही उठकर बैलों को हांकने लगा । लालाकार ने निकट आकर युवक से पूछा कि तुम कौन हो ? कहां रहते हो उसने जमींदार का पता दिया । अब पण्डित जी भी रात को ठहरने के लिए वहां ही गए । दूसरे दिन प्रातः जब लालाकार वापिस लौटने लगा तो इस मित्र ज़मींदार से इसी नौकर को अपने साथ ले जाने और अपना नौकर रखने की बात चीत की । उसने यह सब मान लिया क्योंकि वास्तव में ज़मींदार नौकर (मीशा साहब) के गुणों से अपरिचित था । अतः लालाकार इस सेवक को साथ लेकर श्रीनगर की ओर चल पडा । लालाकार चूंकि रहस्य को भांपे गया था । इस लिए कुछ दूर चल कर वह घोडे से उतरा और मीशा साहिब को चढने के लिए कहा । उसने न माना । लालाकार ने उसकी सच्चाई की और संकेत किया और फिर दोनों पैदल ही चल पडे । श्रीनगर पहुंच कर मीशा साहिब को घर में प्र तपस्या के लिए अलग एक कमरा दिया और इस प्रकार दोनों में प्रेम बढता गया । घर में ही ठहरे रहने के कारण ही उसके हालात लोगों के सामने नही आए अपितु क्रशनकार साहिब के जीवन काल में यह बात प्रसिद्ध हुआ ।

कृष्णकार की जन्म कथा

चूंकि मीशा साहिब दिन रात अपनी तपस्या में लीन रहते थे । लालाकार और उसकी पत्नी इनकी सेवा बराबर करते रहे । लालाकार का पुत्र न था इस प्रकार एक दिन उन्होंने अपनी यह इच्छा मीशा साहिब के सामने प्रकट ही की । वह तो पति पत्नी की सेवा से प्रसन्न हुए थे इस कारण से उसने इनकी प्रार्थना स्वीकार की और लालाकार के घर में एक सुपुत्र ने जन्म लिया माता पिता काफी हर्षित हुए तथा बेटे का नाम कृष्णकार रखा । कुछ देर के पश्चात लालाकार स्वर्गवास हो गए । इस शोक पर उनकी पत्नी मीशा साहिब से संतोष प्रकट करने लगी । कि उनका लड़का बिना यज्ञोपवीत है । इसलिए वह अपने पिता के क्रिया कर्म करने के योग्य नहीं था । आपके जीवन काल में ऐसा होना ठीक भी नहीं है । यह सब सुनकर मीशा साहिब बोले । अच्छा अभी उनका संस्कार करने घर में तो अशान्ति मच गई थी । फिर मीशा ने थोडा पानी शरीर पर छिडक दिया और वह पुनः जीवत हुए । सारे

परिवार में सीमा रहित प्रसन्ता हुई और मीशा साहिब की प्रशंसा होने लगी ।। लालकार फिर 20 वर्ष तक जीवित रहा इस समय के बीच कृष्णकार का यज्ञोपवीत और विवाह संस्कार आदि किया गया । कृष्णकार मीशा साहिब का शिष्य बन गया और गुरू भी बहुत प्रेम तथा स्नेह से शिष्य की देख भाल करता रहता था । आखिर में निश्चित समय पर लालाकार का देहान्त हो गया । इसके बाद मीशा साहिब नदी के किनारे पर तपस्या करने लगा । लोग दर्शनों के लिए आने लगे । एक दिन सामान से भरी हुई एक किश्ती शालमार से गुजर रही थी और वहां पहूंचकार शीघ्र ही रूक गई। हांजी बहुत ज़ोर से खींचते रहे परन्तु कुछ फल न हुआ अन्त में वे सन्त मीशा साहिब से विनती करने लगे तो आपने कहा कि बोलो । मीशा पादशाह यह कहते ही नौका निकल पडी । अब साधारण लोगों को भी इसकी फकीरी का सही परिचय होने लगा । मीशा साहिब आध्यात्मिक शक्ति से पूर्ण थे । इसका प्रमाण कृष्णकार साहिब के हालात से मिलते है । इनके बाद यह उच्च कोटि के सन्त प्रकट हुए । मीश ा साहिब के बाद मुहल्ले का नाम मीशा महला पड गया उनकी समाधि पर एक मस्जिद बनाई गई जहां प्रत्येक वर्ष मेला लगता है यहां सब हिन्दु मुस्लिम दोनों श्रद्धाजली भेंट करते है । कृष्णकार साहिब मस्ताना ढंग से रमण किया करते थे प्रायः हारी पर्वत देवी के चरणों में परिक्रमा करते थे । आप कवि भी थे श्री शारिका भगवती की अस्तुति आपने फारसी भाषा में ऐसे की है कि यह जाती जागती तस्वीर प्रतीत होती है । जिसको पढ कर भक्ति और ज्ञान प्राप्त होता है । परन्तु आजकल फारसी जानने वाले बहुत कम हैं । फिर भी कुछ पद्यांश नीचे प्रस्तुत किए जाते हैं ।

श्री कृष्णकार की फारसी कविता म . स्तोती —

बन्दे शिलातन इश्वरी श्रीशारिका देवी नमः मेहरे चरीचर इश्वरी श्रीशारिका देवी नेः नूरे जहानि ; सुन्दरी ता बन्दह मेहरे अनवरी : माहे फरोज़ा अक्षतरी श्री शारिका देवी नमः देवी जगत माता तुई शिव शिक्त गुरू दाता तुई माता पिता : भ्राता तुई श्री शारिकादेवी नम । ज़ाहिर तुई बातिन तुई हाजिर तुई नाज़िर तुई अवल तुई आखिर तुई श्री शारिका देवी नमः अज़ हर ह कारन बरतरी दर हर दु आलम सरवरी बर फर्क अन्द्र अफसरी श्री शारिका देवी नमः जग रा सरो सामान तुई शाहे शाहंशाहां तुई जिस मे जहांरा जां : दिहीं श्री शारिका देवी नम : लक्ष्मी जहां आराइतू मायाइ विशान अफजा तुई बुध्यी महा विध्या तुई श्री शारिका देवी नम : गर्दे रहत किलते बशर खाके ज़रत नूरे कमर संग स्मेरत खिश्ति जर श्री शारिका देवी नमः तू चारदह रत्ने गरां तू नो निदाने वैकारां तू कानि गौहर शुद अयां श्री शारिका देवी नमः ही इशट देवे शारिका दासे तु केहत्र कृशण कार गोयद तुता जोयद दया श्री शारिका देवी

नमः ।। आप उच्चिकोटि के साधु थे और लोग आप को काफी आदर सतकार करते थे । ऋषि पीर साहिब के आप गुरू महाराज भी ठहरे है । जिसका संक्षिप्त वर्णन पहले किया गया है । हैरानी की बात है कि किसी सज्जन ने आजतक आपका जीवन चरित्र नहीं लिखा है । इसी लिए आपके हालात लोगों के नज़रों से ओझल हैं । आपका और आपके गुरूदेव का आश्रम आप के ही मकान में था जो अभी तक मौजूद है । मकान के चारों ओर बाग भी है । साडे तीन सौ वर्ष लगातार मकान प्रयोग में लाने पर भी प्राकृतिक परिवर्तनों का इस ऋ पर कोई प्रभाव नहीं पडा है । इसी मकान के एक कमरे में आप का और पीर साहिब का दस्ती चित्र मौजूद हैं । आप नगें शरीर कन्दों पर जलता हुआ अग्नि बाण्ड रखते थे । दुख की बात है आप के पुत्र या सेवकों ने आपका दिवस मनाने का कोई दिन नियुक्त नहीं किया है । जिस प्रकार दूसरे महर्षियों का दिवस मनाया जाता है । यह लेखक के 1960 ईसवी की घंटना है । आपके वंश में इस समय श्री गोपी नाथ कोडू, दामूदर इतियादि मौजूद है । आप को मेरा नमस्कार है ।

" पीर साहिब के चमत्कार "

यों तो आपके चमत्का अनगिन्त हैं । फिर भी इश्वर भत्कि और श्रद्रा बडाने के लिए कुछ चमत्कारों का वर्णन यहां पर किया जाता है ।।

रिहमन्द का जन्म (पुत्र)

यद्यपि आप गृहस्पी थे । परन्तू आप सेसारिक झंझटों तथा बन्धनों से मुत्क थे । एक दिन आपकी माता जी अपनी वृदावस्था और असामर्थ्य की चैचा कर रही थी और इस कारण से आपके हां सन्तान होने की चैचा आवपूयत्का प्रकट करने लगी । आपने उत्तर दिया कि एक त्यागी को सन्तान की क्या अवश्यकता है । यह सब चीज़ें तपस्या में बाधा डालती हैं । इस वाद विवाद के दौरान में ही आपके गरू श्री कृश्णजूकार साहिब वहां पहुंच गए । वह साहस और दृडता देखकर प्रसन्न हुए । किन्तु आपके माता के मन का अभि प्राय समझ कर वे बोले कि माता पिता की आज्ञा मानना बेटे का कर्तव्य है गुरू के इन शब्दों पर आपने फिर माता जी की आज्ञा मान कर उनकी इच्छा की स्वीकृति प्रकट की । माता जी अत्यन्त प्रसन्न हुई थोडी देरके पश्चात कार साहिब चल पडे ।

कुछ समय पश्चात शुभ दिन पर माता जी ने अपनी बहू को पवित्रता के साथ आपके कमरे में जाने की आज्ञा दी ।। आपकी पत्नी साथ अपने को सरहाने लगी अन्धेरी रात थी कमरे में पहुंच कर वह क्या अचम्बा देखती है । कि आपका कमरा अत्यालिक प्रकाश से चमक रहा था और आपके शरीर के अंग सभी डीले हो गए हैं

और इसतरह कई दृश्य सामने आए । इन भयानक दृश्यों से उसका दिल ﴾ पत्नी का﴿ भय भीत होगया । वह यह सहन न करके भाग निकली और दिल में कई तरह के विचार आने लगे तथा अपने को दोषी ठहरानेलगी । परन्तु आप उसके विचारों से . अपीरचित नहीं थे । सारी रात इसी चिन्ता में बीत गई । अपने समय पर प्रायः उठ खडे हुए और अपनी पत्नी को पुकारने लगे । ज्यूँ ही उसने आपको स्वस्थ अवस्था में देखा त्यूही उसका दिल ठिकाने लगा और प्रसन्न हुई । आपने इस भेद को प्रकट न कर सकी । दूसरे दिन प्रातः जब माता जी ने ऐसे पूछा कि आपके कमरे में रात को कौन था तो आपने उत्तर दिया कि बिना धर्म पत्नी के और कोई न था । आगे निश्चत समय के बाद सन्तान ने जन्म लिया । आपकी माता अति हर्षित हुई । रीति अनुसार उसका नाम कर्ण किया और उसका नाम रिहानन्द रखा गया । परन्तु दूर्भाग्यि से बच्चे की मां स्वर्गवास होगई । फिर आप ने बच्चे को पालने के लिये एक मुसलमान के घर दाछी गाम भेजा शायद वह आप का सेवक था वहां वह 16 वर्ष तक पाला गया ।।

आपकी माता ने गंगा अष्टमी पर गंगा जी जाने की इच्छा प्रकट की आपने उत्तर दिया कि तुम इस वृद्धावस्था में जा नहीं सकती अतः यदि विश्वास हो तो मैं गंगा जी को यहां आने की प्रार्थना करूँगा । किन्तु माता जी को पूर्ण विश्वास नहीं हुआ । फिर आपने यह सुझाव दिया कि हमारे पुरोहित गंगा जी जारहे है । इस लिए कोई विशेष वस्तु गंगाजल में डालने के लिए उनके हाथ दे देगें । माताजी ने यह बात मानली । फिर अपना एक सोने का कड़ा उस के हाथ में देदिया अष्टमी के दिन जब गंगा स्नान का समय आ पहुंचा तो आपने माता जी से बितस्ता नदी बटयार घाट पर स्नान करने को कहा । वहां । वह फिर कई नारियों के साथ चल पडी और पानी में उतरी तो पानी से एक साथ प्रकट हुआ जिस में वह सोने का कडा था माताजी ने कडे को हाथ में ले लिया । स्नान करके घर आई सब नर नारी अत्यनत प्रसन्न हुए और आपकी सराहना की।

आप के माता जी का देहान्त

कुछ समय के बाद आपकी माता बीमार पडी और परिलोक सिधार गई । आपने माता जीं की जुदाई काफ़ी महसूस की । वह कठिनाइयां याद आई जो उसने आप को पालने में उठाई थी । इस लिए माता की स्वर्ग प्रप्ति के लिए 14 ½ वर्ष की तपस्या का फल अपर्न किया । फिर भी मर्यादा को रखने के लिए उसका क्रिया कर्म किया । उसके दसवें दिन पर आप के गुरू महाराज भी आगये । उन्होने आपसे कहा कि चौदह वर्ष का फल तो अर्पण कर चुके ही अब और तपस्या करनी पडेगी नही तो खाली हाथ रहोगे । इस पर आपने फिर 14 वर्ष तपस्या करनी आरम्भ की ।।

तपस्या का दूसरा दौर ।

आपने फिर एसी कठिन तपस्या की कि खाना पीना भी छोड़ दिया और केवल दूध और पानी पर ही सन्तोष किया जिस के कारण आप का शरीर दुर्बल हो गया । टागें तथा पांव चलने फिरने के योग्य नहीं रहे । फल स्वरूप मनुष्य क्या देवता भी चकित हुए । जब चौदह वर्ष समाप्त हुए तो गरू देव प्रकट हुए । आपकी प्रशंसा की और अति प्रसन्न हुए । स्वयं आपको नए कपडे पहनाकर गदी ﴾ सिंहासन﴿ पर बिठाया उसी दिन से आप पीर पण्डित पादशाह के नाम से प्रसिद्ध हुए और बडी बडी करामाते करने लगे और सैण्कडों सेवक बन गए ।।

पुत्र रिहान्द का यज्ञोपवीत संस्कार

कुछ समय के पश्चात एक दिन यज्ञोपवीत धारण करके एक बालक भेंट ﴾ नियाज़﴿ लेकर आपके पास आया । इसको देखकर आपको अपने सन्तान की याद आई । तथा उसके यज्ञोपवीत संस्कार का विचार आया । शीघ्र ही आपने सेवक नानशाह को बताया और अपने पुत्र रिहान्द को दाछी ग्राम से लाने की आज्ञादी । उसने दाछी ग्राम से लाकर बालक को उपस्थित किया । अब यज्ञोपवीत संस्कार का प्रबन्ध आरम्भ होने लगा। किन्तु कुछ ब्राहमन देवताओं ने इस बालक का मुसलमान घर में पालन होने के कारण अप्रसन्नता प्रकट की । इस अलोचना को सुनकर आपने नानशाह को आदेश दिया कि इस लडके के पीठ पर तीनवार छडी से खरमं लगा दो । आज्ञा अनुसार सेवक ने ऐसा किया तो बालक के शरीर के तीनभाग भिन्न भिन्न हुए । फिर आपने आज्ञादी कि इन भागो को वितस्ता नदी में फेंक जाओं फिर बालक को नाम से पुकारो । नानशाह ने एसा ही किया तो क्या हुआ । बालक वास्तविक रूप में पुनः प्रकट हुआ । फिर नए कपडे पहनाकर आपके सामने उपस्थित किया गया । पिता ने पुत्र का मुख चूमलिया और उस का चेहरा चन्द्रमा जैसा मुखडा बन गया । उस के बाद अलोचक ब्रहमणों से फिर पूछा कि क्या रिहानन्द यज्ञोपवीत संस्कार के योग्य हो गया । सारे लोग जब आपकी आत्मशत्कि को देखकर दगं रह गऐ । और ब्राहमण लज्जित हुए । बाद में धर्म पूर्वक और कुल रीति से रिहानन्द का यज्ञोपवीत संस्कार किया गया प्रेत्यक व्यत्कि को प्रशाद बाटां गया और दान भी दिया गया ।

पुत्र रिहानन्द की शिक्षा व विवाह

चूंकि रिहानन्द को दाछी -- गांव में शिक्षा प्राप्त हो न सकी इस लिए शुभ मुहूर्त पर इसका विधा आरम्भ किया गया थोडे वर्षों में ही उससे विधा प्राप्त की और उस के उपरान्त [illegible] एक दिन कोई

कोई अच्छे परिवार का एक सज्जन आपके पास उपस्थित हुआ । और आपनी बेटी के विवाह कराने के सम्बन्ध में प्रार्थना की । उस के साथ ही अपनी गरीबी तथा दीन दशा का वर्णन किया । उसकी यह दशा सामाजिक कुरीतियों से हुई थी । इन हालात को सुनकर आपने उसे तसली दी । और कहा कि यदि तुम मेरे बेटे के साथ नाता जोडने में कोई बुराई न समझोगे तो तुम समाज की बुरी रीतियों तथा अधिक व्यय करने से मुक्त होजाओगे । पण्डित जी ने इस पर अपनी स्वीकृति के साथ धनयवाद भी किया । अब शुभ कार्य का प्रबन्ध होने लगा । निश्चित दिन पर बरात . धूम धाम से निकली और बरात में दो हज़ार बराती लिए गये । लड़की वाले के घर जब बरात पहुंच गई तो बरातियों की गिन्ती को देख कर लड़की का पिता घबरा गया और कही छिपा बैठा । आपसे यह सब कुछ छिपा तो न था । नही इसलिए आप ने लडकी वाले को बुलाकर तसली दी और यह उपदेश दिया कि रसोई वर्तन ढकने के बिना रहने न पाए । और सभी बरातयों को भोजन देने से पहले मेरे लिए भोजन भेज दिया जाये आप की आज्ञानुसार लडकी वाले ने एसा ही किया । सारे बराती प्रसन्न होकर भोजन खा चुके परन्तु फिर भी कई बरतन खाने से भरे पडे रहे । लडकी वाले को यह देख कर बडा आशार्चय और प्रसन्नता हुई । लगन कार्य भी सिद्ध हुआ और अन्त में सभी बरातियों समेत आप घर लौट आए और बाजे बजने लगे ।

आग की घटना

आपने शिष्यों अथवा भातुकर्द् के लिये 14 पैसे काजो चढावा ﴾ नियाज﴿ ... नियुक किया था । वह कई लोगों का बोझ मालूम होने लगा । कई शिष्यों को यह देना भूल भी गया । लापरवाई यहां तक हुई कि कई लोगों ने चढावा के बदले अफीम के गोले दिये । जिस के खाने से आप को गर्मी पैदा हुई । किसी सज्जन ने दूध का प्याला दिया । लोगों के इस अलाद-रका परिणाम यह निकला कि अचानक शाहर में आग लग गई । आलीकदल सैनाकदल , बोरही कदल और जमिया मसजिद तक करीबन दो हज़ार मकान राख हो गए । इन मकानों में केवल उसी का मकान बचा रहा जिसने आप को दूध पिलाया था । जब आग फैलती गई तो कई लोग आप के पास आकर विनती करने लगे और यूँ प्रार्थना करने लगे कि आप कुछ साहयता करें क्योंकि आप का नाम मुश्किल आसान पड गया है । अन्त में आप ने अपनी खडाऊं का एक पांव देकर इसको अग्नि में डालने की आज्ञा दी । लोगों ने आदेश का पालन किया और अग्नि शान्त हो गई । चमत्कार को देख कर लोगों में आपका काफी विश्वास और प्रेम बढने लगा । यह घटना 1975 विक्रमी में हुई जब कश्मीर का गवर्नर इफतियार खां था इस का वर्णन

काश्मीर के इतिहास में भी आचुका है ।।

" नाव की यात्रा "

एक दिन आप शिष्यों के साथ नाव में बैठकर नूर बाग की ओर सैर को चले गए । एक सप्ताह के बाद आप के आश्रम की ओर लौटते समय एक शिष्य नींद में मस्त सोने के कारण नाव में न आ सका न दूसरे शिष्यों को उस का ध्यान रहा । जब वह शिष्य जाग पडा और अपने को अकेले पाया उस ने नदी पार करने के लिए नाव की तलाश की परन्तु वहां पर कोई नाव न पासका । फिर क्या होता है कि शाहि नूरबाग अपने प्रयोजन पूर्ति ﴾मारने﴿ के लिए मल्लाहीं बन कर इस शिष्य के पास नाव लेकर आया । नाव में उत्तरते समय शिष्य ने आपका नाम लिया । यह सुन कर शहिनूर बाग सहम सा गया और अपने प्रयोजन को हल करने में असमर्थ रहा । इतना ही नही अपितु आप के मा के लिए नाव को पास पहुंचाया । आपके शिष्य को आश्रम तक पहुचाने का भी प्रबन्ध करने लगा । इतने में आप के दूसरे शिष्यों ने जो इसकी खोज में निकले थे शाहिनूर बाग को शिष्य के साथ आते देख लिया । शिष्य के साथ वापिस आया । सेवक आपकी इस शक्ति को देखकर चिकित रहे ।

" एक मुस्लमान व्यापारी को तूफान से आजादी "

एक मुस्लमान व्यापारी अपना माल नाव द्वारा श्रीनगर ला रहा था चलते चलते नदी में अचानक तूफान आया और नाव डूबने लगी । व्यापारी काफी निराश हुआ था। इस कठिन समय में वह प्रेत्येक सन्त और फकीर का नाम लेने लगा और चढावा देने का वचन भी देता रहा परन्तु कोई साहयता न कर सका । अन्त में आप का नाम भी लिया तथा भेटं चढाने का मन में ही वचन दिया । स्मरण करने पर ही तूफान रूक गया और नाव चल पडी । इसके बाद कुछ समय तक व्यापारी भेटं चढाना भूल गया । आखिर कुछ देर बाद उसे स्मर्ण कराया गया । फिर वह आप के पास आकर क्षमा याचना करने लगा । और वचन भी पूरा किया । आगे चल कर वह अन्य शिष्यों की तरह आपकी सेवा करने लगा ।

" जहूरद्दीन नामक एक मुस्लमान के लडकी को सन्तान प्राप्त "

स्त्री जाती को प्राय बच्चों की प्रीति होती है इस की एक उदाहरण यह भी हैं ।

सफाकदल के जहूरद्दीन नामक एक मुस्लमान की लडकी विवाहित थी ! काफी समय तक उस को कोई सन्तान न हुआ ज़ियारतों और फकीरों के पास जाकर भी मनोरथ सिद्ध न कर सकी । अन्त में आपके पास आकर साविनय अपनी मनोकामना

प्रकट की । क्योंकि वह वास्तव में नेक और पवित्र थी । आपने उसका ढारस बन्धाया और यह शर्त रख दी कि यदी आप अपने सारे आभूषन वितस्ता नदी में फेंक देंगी तो सन्तान प्राप्त होगा । उसने आज्ञा स्वीकार की । घर पहुंच कर ऐसा ही किया । आखिर में वह पुत्रवती हुई । परन्तु बालक एक आंख से काना था । अब वह पछताती, रोती आपके पास आई और कहने लगी कि आपने दया अवश्य की लेकिन अपूर्ण । आपने उत्तर दिया कि तुमने मूल्यवान वस्तु को सन्तान से अधिक प्रिय समझा इस लिए खुदा {भगवान} ने भी एक आंख की रोशनी न दी क्योंकि यह न समझो कि घर में छिपाने से वह न देखता है । इसपर उसने आपसे सविनय क्षमा की प्रार्थना की । फिर आप ने कहा कि जब तुम उसी छिपाये हुए आभूषन को नदी में अर्पन करोगी तो तब ही बालक के नेत्र को रोशनी आए गी । वह फूले न समाई तो इस बात की काफी प्रशंसा हुई। और आपका आदर बढने लगा ।

" बाजार की सैर "

एक दिन आप पालकी में सवार होकर कई शिष्यों के साथ बाज़ार की सैर को निकले । उसी दिन गर्वनर काशमीर सैफखान का एक मस्त हाथी आप से बाहिर हो गया था और बाज़ार में काफी शोर मचा हुआ था जब आपके कहारों {पालकी उठानेवाले} ने भी इस हाथी को देखा तो भयभीत होने के कारण उन्होने आपकी पालकी सडक पर ही रखली और स्वयं भाग निकले । उन को इस अवसर पर आपका संत भाव और अध्यात्मिक शक्ति भूल गई । अन्त में जब यह पागल हाथी आप के पास आ पहुंचा तो वह अपना सिर झुकाकर सामने ठहर गया आपने उस के सूंड पर अपना हाथ फेर लिया और हाथी के होश ठिकाने लग गए । जब महावत ने यह सब देखा तो वह आश्चर्य चकित रह गया । फिर वह समाचार गवर्नर तक भी पहुंचता है । वह प्रसन्न होकर स्वयं भेटं चढाने के लिए उपस्थित होता है । उसने आपकी आध्यात्मिक शक्ति की काफी प्रशसां प्राप्त करके लौट चला ।

श्री रूप भवानी से दरशन होना

आपके जीवन काल में श्री माधव जू दर जो एक महान साधु थे उसके घर में रूपभवानी का जन्म हुआ था । इस की कथा सन्तमाला में आ चुकी है । एक बार वह आपके आश्रम पर आई । आप उस समय {श्री पचंमो} के काम में लीन थे साथ हो माया भी प्रबल होतीं है उसे पहचान न सके और उसे भी यथी रीती चावल के फूल दिए इस पर श्री रूपभवानी ने कहा {आखिर द्राक लाय गरू} चावल के फूल बेच ने वाला। यह कशमीरी भाशा का शबद हैं । कुछ वादविवाद भी हुआ । अन्त में आप समझ गऐ

फिर क्षमा मांगी ।। फिर वह सेवकों समेत विदा हुई ।।

मुल्लाह आखून शाह का वृतांत

मूल्ला अखून शाह नामक एक जादूगर उन दिनों हारी पर्वत के दक्षिन में रहता था जो कि प्राय: साधु वेष ही धारण करता था उस के मकान के खण्डरात अब भी मौजूद है, उसकी जादूगरी में बहुत बडे कमालात थे उसके निवास स्थान के नज़दीक एक तलाब बनाया था जिसे आबिज़ुलाल कहते थे । इस जल में ऐसा प्रभाव था कि वह कोई कठिन से कठिन कार्य आसान बनाता था । लोग इस की जादूगरी से अपरिचित थे । कहा जाता है कि वह इस जादूगरी के बल से पंजाब के एक धनाडय सेठ की सुन्दर लडकी को प्रतिरात्री यहां अपने मकान में अपना मुहं काला करने के लिए लाता था ।। कई महीने इसी तरह गुज़र गए । यह बात किसी तरह प्रकट न हुई । कुछ समय के बाद जब लडकी गर्भवती हो गई । किन्तु बालिका कुण्वारी थी । उसकी माता पिता को बहुत चिन्ता हुई और विवश होकर लडकी से पूछ ताछ की । पहले वह लजा के कार्ण चुप रही । किन्तु माता पिता के आग्रह करने पर उसने सारा वृतान्ता कह सुनाया ।। माता पिता और सम्बन्धी आश्चर्य में पड गए । करें तो क्या करें? नि:सहाय थे । उन्हों ने लडकी से पूछा क्या उस देश या स्थान का कुछ पत्ता है जहां वह तुझे रात को ले जाया करता है । परन्तु उस बिचारी को कुछ ज्ञात न था । अन्धेरी रात में उसको कुछ पत्ता न चलता था । इस पर माता पिता ने कहा कि तुम उस स्थान का विशेष फल या वस्तु मांगलो । दूसरे दिन वह अपने साथ बादाम वृक्ष की एक टहनी फल सहित ले आई । सो विचार करने पर यह अनुमान लगाया गया । कि यह काश्मीर का फल है । उसके बाद उन्होंने देहल्ली के महाराजा औरंगज़ेब तक यह समाचार पहुंचाया । वह इसलामी धर्म पर पक्का था उसको इस बात पर क्रोध आया । उसने एक दम गवर्नर कश्मीर को आदेश भेजा कि वह सभी जादूगरों को देहल्ली भेज दे । सैफ खान यहां का गर्वनर था वह इस के खोज में लग गया । उस समय आप के सिवाय और कोई प्रसिद्ध सामर्थ वाला संत नहीं था । उसने संत और जादूगर की पहचान न करके आप को ही देहल्ली भेज दिया इस बीच में मुलाह आखून शाह ने आप को निमन्त्रन भी दिया ।

आप को आखून शाह का निमन्त्रन

आखून शाह को आपकी दिव्यशक्ति और चमत्कारों का कान्टा खटकता था । उस के मन में वैर भाव उत्पन हुआ था उस के अतिरिक्त वह आपके गुणों से पराजित भी हुआ था जिस का उसे ईदगाह के मैदान में महात्माओं की सभाओं में व्यहारिक

अनुभव हुआ था ।। ईदगाह में यह सभा प्राय: लगती थी जिस में आखून शाह भी उपस्थित होता था । परन्तु सबलोगों में आप की अध्यात्म शक्ति उच्ची थी । इन कारणों से आखून शाह आपसे बदला लेना चाहता था । इस प्रकार एक दिन उसने आपको निमन्त्रन दिया • क्यों कि आप किसी के निमन्त्रन को ठुकराते नही थे इस लिए आपने उसका निमन्त्रन स्वीकार किया परन्तु निम्नलिखित शर्तों पर ।।

1. निमन्त्रन में प्रयोग होने वाले वस्तुऐं सफाई शुद्धता और पवित्रता से त्यौर कीजाएं । 2. प्रत्येक वस्तु सम्पूर्ण होनी चाहिएं और झूठा न कीजाएं भेड़, मुरगं आलू इत्यादि..... इन के सभी अंग मौजूद हूं 3. 1250 मूर्तियों के लिए भोजन बनाना चाहिए । 4. एक ही समय पर सभी थालियां ढकनों समेत सभी मूर्तियों के सामने रखी जानी चाहिएं

यह सब शर्ते मुलाह आखून शाह ने बड़े अभिमान के साथ स्वीकार की साथ ही 1250 हिन्दुओं को धर्म परिवर्तन कराने की अशाभी मन में ठहरगई । प्रबन्ध अनुसार उस ने एक बडा हाल सजाया और सभी पदार्थी को तैयार किया निश्चित समय पर जब आप शिष्यों समेत पधारे तो आखून शाह ने पहले फारसी भाषा में इन शब्दों में आपका स्वागत किया ।

मल आखून शाह ने फारसी कविता में कहा —

इमरोज़ शाहि शाहां मेंहमान शुध्न अस्त मारा ज़बरील व मलाइख दूरवां शुद अस्त मारा ।

अर्थ— आज राजाधि राज मेरे अतिथि हूए हैं और महाकान अपने आधीन देवताओ के समेत आपके सण्तरी बने हैं ।।

आपने भी फारसी कविता में उत्तर दिया

दरबार गाहि वहदत कसरत चिकार आयद हशंत दह हजार आलम यंकता शुध्द अस्त मारा । दर खलवते गद्दायां मज़िल कुजा व गुलजार बेवज़्म व नवाई सामान शुध्द अस्त मारा । बुतखानए जहां रा बिस्यार सैर करदम । आईनि खुद परस्ती ईमां शुध्द अस्त मारा ।

अर्थ— इस संसार के बड़े फैलाव में भगवान काचमत्कार एक ही है । इसी तरह मेरे पास आठरह हज़ार भवन एक समान है । संसार से न्यारे ईश्वर के प्यारे भक्तों कोफुलवडियों से क्या प्रयोज़न है । एकान्त और वैरागी ही मेरी जीवन सामगरी बनी है । मैं संसार के सारे तीर्थों, शिवालों तथा ज़ियारतगाहूं की सैर कर चुका हू अन्त में अपने शरीर के भीतर ही आतमव ज्ञान का सार आया । वही उस के मिलने का कार्ण बना ।। आप के ज्ञान वाकय सुनकर अखूनं शांह प्रसन्न हुआ । आदेश आनुसार खान ढकनों समेत चादरों पर लाया गया । आपके शिष्यों में शंका के कार्ण काना फूसी होनेलगी कि

कि क्या पीर साहिब यह भोजन ग्रहन करेंगे । आपकी आत्मशक्ति तो पराकाष्टा पर पहुंच चुकी थी । पहले तो आपने वही आविजुलात मंगवाया और उसे प्रभाव रहित कर दिया । उस के बाद एक चलू भर पानी उठाकर सभी भोजन से भरे हुए बर्तनों पर छिडक दिया । फल स्वरूप ऐसा चमत्कार हुआ कि सारे पदार्थ वास्तविक रूप में आगऐ मुर्ग और भेड जीवित होकर चलने लगे । केवल एक मुर्ग एक टांग से लगंडा रहा मुर्ग की टांग एक कम होने पर आपने क्रोध से बोला कि इसकी दूसरी टांग तुरंत सामने लाओ वरना अपनी टांग आपको देनी होगी । खटे यह है कि कोई अभागय रसोइया इस टांग को चख चुका था मुला ओखून शाह लज्जित हुआ । रसोइया को दरबार में उपस्थित किया और हाथ जोड कर क्षमा याचना करने लगा । आप ने दयालु होने के कारण उसको माफ किया और मुर्ग की टांग ठीक हो गई ।

अन्त में आखुन शाह से कहा कि यह पकवान झूठा होने के कारण अस्वीकार हुआ सारे निमन्त्रिक व्यक्ति आश्चर्य में पड गए और शोष .. झुकाया । फिर सभी आश्रम की और लोटे । इस चमत्कार का चेचा श्रीनगर तथा कश्मीर के अन्य भागों में होने लगी ।

औरंगजेब की और से देहल्ली आने की आज्ञा

क्योंकि गर्वनर कश्मीर कुछ समय तक जादूगरों की तलाश में था । कुछ प्रतिष्ठित पुरषों के कारण आखूनशाह की जादूगरी का रहस्य गर्वनर के ध्यान में नही आया । अपितु आपके सम्बन्द में ही शंका प्रकट की गई । अतः गर्वनर ने आप का नाम अपने पत्र के समेत देहली भेज दिया था पत्र का विष फारसी कविता में इस प्रकार लिखा गया था ।

मुखत्सर पत्र गर्वनर काश्मीर महाराज औरगंज़ब के नाम :-

सेफखांन बिनवीसत शाहेहन्द रा कि ए शिहरयार -

हसत दर काशमीर हिन्दोंए कस ज़ईफ व नजार ।

दस्त व पायश नेस्त तखतश अफसरों वर सर बिरून्द ।

सरवरां दर सजदह अय शामो सहर बरदरंद ।

ज़ेरि फुरमानश हमह मुलक व मलक जिनव परी ।

बाबजोदे नातुवानी बरहमह कस बरतरी ।।

सजा उंगुशतर कुनानीद अस्त खुदरा बादशाह ।

बादशाह नह मुहर हर अतराफ गर्दद बाजखाह ।।

अर्थ:- यहां एक हिन्दु है जिसके हाथ पैर बेकार हुए हैं । परन्तु उसे एक पालकी में उठा कर सैर कराया जाता है । उच्चि कोटी के लोग तथा गरीब सायम प्रतः बडे आदर के साथ इसके सामने शीश नवाते है । सारे देवताओं, परियों ओर लोगों में इसकी आज्ञा का पालन होता है शारीरिक निर्बलता होने पर भी उससे सर्वश्रेष्ट माना जाता हैं । हाथ

में अगंठी है । शासकीय ढंग से उसकी मुहर लगा कर आदेश जारी करना है । और भेटं भ लेता है । जब औरंगज़ेब ने यह पत्र पढ लिया । तो उस ने अपने . . ओर से दो सेवक गर्वन काशमीर के पास भेज दिए और उनको आदेश दिया कि ऐसे जादू- गर संत को देहली भेज दिया जो । इस प्रकार जब यह सेवक कशमीर पहुंच कर आपके पास राजा की आज्ञा लेकर आए तो अपनी दुर्बलता के कारण आज्ञा पालने में असमर्थता प्रकट की किन्तु सेवक आज्ञा भंग नही कर सकत थे वे वहां ले जाने के हठ पर स्थिर रहे इस पर आपने एक रात का अवकाश मांगा । फिर क्या हुआ । कि उसी रात आपने आत्मशक्ति से एक गर्जता हुआ सिंह उपस्थित किया । आप उस पर सवार होकर उसी रात एक घण्टे के अन्दर देहल्ली पहुंच गये । औरंगज़ेब के दरबार के बाहिर कडा पहरा लगा, था । सिंह ने एक छलांग मार कर महल में प्रवेश किया और फिर राजा के होश उड गये और आपसे हाथ जोड कर प्रार्थना की कि हे महाराज आप कौन हैं और कैसे पधारे हैं इस पर आप ने (पीर साहब) उसी का लिखा पत्र औरगंज़ेब को दिखाया जिसके अनुसार राजा आश्चर्य चकित हुआ । और सोच समझ से विनती की । महाराज आप शेर को वहां रख कर गदी पर विराजमान होकर कहें जो कुछ आपने कहना है । मैं . शेर से डरता हूं । खैर आपने ऐसा ही किया और फारसी पद्यों में कहने लगे ।

फारसी कविता में पीर साहिब का जवाब :-

कीसती बा सालिकाने राहि मैने दम ज़ानी ।
चीसत तदवीरे तु किया मद तु वक्ते जांकनी ।।
गरतुरा ज़ोरे स्त दर बाज़ू बियाहम पंजह शौव ।
वरनह अज सर पंजह शेरे अजल खुद रंजह शौव ।।
चस्ति नैरोऐ तु खाडी पीरपंडित पादशाह ।
बादशाहे हरदु आलम खुद अनम ना मन तुरा ।।

अर्थः- क्या तम्हें ईश्वर भक्तों के साथ छेडने की शक्ति है । इस समय तेरा अन्तिम समय आया है इसलिए बचने का उपाय करों । यदी मुकाबला करने की शक्ति तो है इस सिंह रूपी मृत्यू से परख लो । इसी से तेरा अन्त होगा । हां अगर में बादशाह कहलाता हूं इस से तेरा क्या मतलब है । फिर औरंगज़ेब ने उत्तर दिया ।

औरगंज़ेब ने फारसी कविता मैं क्षिमा मांगी :-

ताज बखशी कुन शहा बर ई गुलामे बद कमाश ।
देह बराते जो बचंगम कुन दरंग अन्दर खराश ।।
परसरे उँगश्त खुद अज नोकि कजलक ज़ीब दाद ।
कत्तरए खूनए चकीदा दरमदा औ दाद मदाद ।।

गुफताश आलमगीर ए मिहरे सिपहरे ए तिला ।

दर खतायस खत कशाकश बरसर जिनेह दस्ते अता ।।

है महाराज आप मुझे कुकर्मी, अधर्मी नोकर को जीवन दान देकर क्षमा करें । फिर राजा ने उगंली काट कर रक्त से नया आदेश लिखा जिसके अनुसार पिछला आदेश निर्रथक ठहराया गया और गलती के लिए क्षमा मागीं गई ू। साथ ही आपको ॥ पीर साहिब॥ पीर पडिंत पादशाहि हर दो जहां मुश्किल आसान की पदवी दी गई । दूसरा आदेश गर्वनर काश्मीर को भेजा गया जिस में उस से गलत समाचार अथवा नाम भेजने के लिए फटकारा गया कि तुरन्त वह निशाचित भेंट लेकर के आपके पास उपस्थित होकर क्षमा मागे बादशाह औरंगज़ेब को आपका आत्मशक्ति देख कर आप पर श्रद्दा पैदा हुई इसलिए उसने आगे फिर सविनय प्राथना की कि आप अब मेरे ॥ औरगंज़ेब॥ गुरू हैं । अतः मेरी एक और प्रार्थना स्वीकार कीजिए ॥ वह यह है कि कुछ समय से मुझे ॥ औरगंज़ेब प्रत्यक खाध पदर्थि में रक्त दिखाइ देता है । जिस कारण मैंमें कुछ खा नहीं सकता । और घूंगा होता जाता है । पाचन शक्ति भी अब कमज़ोर होती जा रही हैं । इस का कृप्या इलाज पता दीजिए ।

यह सूनकर आपने ॥ पीर साहब॥ उत्तर दिया । कि यह सब सरमद नामक संत की निरापराध हत्या करने का फल है । खैर ! अब से आप अपने हाथों की कमाई ही केवल खाने के प्रयोग में लायें और शासन में समदृष्टि से काम करें । इन नियमों के पालने से अवश्य कुछ लाभ होगा । इस सम्बन्ध में आगे कुछ उपदेश भी दिया ।

पीर साहिब का उत्र पारसी कविता में :-

जिश्त जेबा हर चि बीनी दस्त व रो बर वै मनेह ।

एब तुंनंतगर नुमाई गेबते सुसतगर अस्त ।।

गर चिह मिलत मुखतलिफ शुद हेच कस महरूम नेस्त ।

बागवांरा दर चमन हर गुल बरंगे दीगर अस्त ।।

अर्थ-- किसी को सुन्दंरता या बद सूरती पर ध्यान देना या आलोचना करना ईश्वर निन्दा के समान हैं ! अपितु वह सम दृष्टि रखता है । जिस प्रकार एक माली अपनी फुलवाडी में कई प्रकार के फुल उगाता है और पालता है । इसी प्रेकार राजा भी एक माली के समान होता है । इसके उपरान्त आप राजा के लिखे शब्द लेकर श्रीनगर लौट आए । दूसरे दिन सुबह पहले भेजे हुए सेवक फिर आये तो आपने उनको रक्त से लिखा हुआ दूसरा आदेश दिखाया यह देख कर वह चकित होकर भाग निकले । सैफखान गर्वनर कश्मीर भी यह चमत्कार देखकर लज्जित हुआ । कुछ दिनों के बाद औरगंज़ेब का भेजा हुआ पत्र भी सैफखान को पहुंच गया । उसमे राजा ने लिखा था कि तुम जादूगर

आकर संत में भेद नहीं कर सके । पीर साहिब हर दो जहां के मालिक है वह अब मेरा भी गुरू हैं । मेरे ओर से स्वंय भेंट लेकर उनके पास उपस्थित हो जाओ । और साथ ही कुछ गांव उसको जागीर में दे कर उसकी प्रसन्नता प्राप्त करो ।

आदेश अनुसार सैफखान स्वयम आपके पास भेंट लेकर आया । और कुलगाम की तरफ कुछ गांव जागीर में भी दिए सौफखांन के पत्र में राजा ने यह शब्द स्वंय फार्सी पद्यों में लिखे थे ।

औरगज़ेंब का पत्र सैफखान गर्वनर के नाम :

फउलहकीकत पीर पांडित पादशाहे मुलकि मास्त ।
मालिकए सिलके खुदा व मालिक मुलके कजास्त ।।
रौब व खाके आसतानश जवह फरसा शाद बाश ।
अज़ सजोदे दरगहश अज़ बन्दि गम आजाद बाश ।।

अर्थः- सचमुच पीर पडिंत पादशाह एक सच्चा और परम । ईशवर भत्क हैं । मेरे राजय पर क्या देवताओं पर उसका शासन है । इसके आश्रम पर जाकर भेंट दो । और चिन्ता ... की कडियों से स्वतन्त्रता पाकर ~~और~~ उसकी प्रसन्नता प्राप्त करो ।

इसके बाद सैफखान ने गुप्तचरों द्वारा तथा आपके इशारों से सच्चे अथवा असली जादूगर का पता निकालो । उसको यह विश्वास हुआ कि आखूनशाह के सिवाय यहां और कोई नहीं है फिर सैफखान ने लोहे का पिंजरा बनवा कर आखूशांह को बन्दी बना के बिल्ली राजा के पास भेजा । वहां उसको एक कठोर कारा गृह में बन्द रखा गया । इसी काराग्रह में कुछ समय के बाद उसकी मृत्यू होती है ।

इसके समबन्ध में एक और विचार धारा भी है कि जब वह बन्दी बन कर देहल्ली पहुंचा तो एकबार प्यास के बाहाने से एक माशकी से अपने उपर पानी डाल बाया फिर वह बपने ज़ोदू के बल से पिंज़रे से मुक्त होकर भाग निकला और फिर उसका कोई पता न चला ।

मुस्लमान फकीर सरमद की कथा

ज़िल्ला आगरा में सरमद नाम का एक ईश्वर भक्त हो गुज़रा है । वह साधु और कवि भी था । एक दिन वह राजा के महल के रनवास की ओर से जा रहा था और फारसी के यह शब्द कहता फिर रहा था ।

चहार चीज़ अज़ गम दिल बुरदन्द कुदाम चहार ।

अर्थः- मन किन चार चीज़ों से खेंचा जाता है । राजा की लडकी जेबुननिसा ने जब यह शब्द सुने तो उसने उत्तर इस शब्दों में दिया

जेबउन्निसा ने उत्र दिया :-

शराब सब्ज़ह व अबिरवां व रोयनिगार ।।

शराब , हरा घास बहता जल, प्रयसी का मुख राजा ने अपनी लड़की के शब्द सुने जिस पर राजा ने डकी से पूछा कि तुम ने क्या कहा ? चूंकि वह एक अच्छी कवित्री थी उसने शब्दों में परिवर्तन करके तुरन्त उत्तर दिया

औरंगज़ेब के एतिराज़ पर जेबउनिसा ने यह कहा :

निमाज रोज़ह व तोबह व इस्तिगफ़ार ।

अर्थः5 1. निमाज़ 2. रोज़ह 3. रोयारह न करना और 4 क्षिमा

अब राजा ने सरमद कलन्दर को इस्लाम की नीति के विरूद्ध नगां फिरते पर सूली पर चढाने की आज्ञा दी । सूली पर चढ़ते समय सन्त सरमद ने यह कहीं । सरमद ने फांसी के समय फारसी कविता में कहा ।

एदीदह सरां अबल बियोशेद। दर चारह कारि मन बिकोशेद । जानानि मरा बमन बियारेद । ऐं मुदहे तनम बदो सुपारेद । गर बोसह ज़नंद बदो लबानम । वर... ज़िन्दह शवम अजब मदारेद । {यह मिसरा जामी शायर ने पूरा क्या है}

अर्थः- ऐ नेत्रवान और बुद्धि -- मान लोगो । मेरे कार्य में यह प्रयत्न अवश्य करें । कि इस मृतक शरीर को फिर मेरी प्रेमिका को सौंप दिया जाए । और यदि वह मेरे होंठों को चूमेगी तो मुझे पुनः जीवन प्राप्त होने में कोई आश्चर्य नही हैं इसके अपरान्त मन्त्रियों और सभासदों ने राजा को इस बात की पडताल करने का परामर्श दिया । औरंगज़ेब राजा ने परामर्श स्वीकार करके अपनी लडकी को सरमद के होंठ चूमने की आज्ञा दी । परिणाम स्वरूप लड़की के चूमने के तुरन्त बाद सरमद पुनः जीवित हुआ । यह देख कर सभी दर्शक विस्मित हुए । अब से फिर सरमद मस्ताना ढंग से घूमता रहा और यह शब्द कहता रहता था ।

फ़ारसी कविता में सरमद ने कहा ।

आंकस कि तुरा ताज शाहन शाही दाद । मारा हमहा असबाबि परेशानी दाद । पूशीदह लिबास हर किरा ऐबअस्त । बे ऐबां रा लि बासि उरयां दाद ।।

अर्थः- जिस ईश्वर ने तुझे सिंहासन और शासन दिया उसी ने मुझे आवारगी के साधन दिये । उसी ने दोषी के लिये पोशाक बनाया दोषरहित को नगां फिरना बता दिया ।

राजा बार बार यह सुनकर क्रोधित हुआ और अपने मन्त्रियों की फिर एक बैठक बुलाई । नंगा फिरना इस्लामी नीति के विरूद होने के कारण उसे फिर सूली पर चढ़ाना बैठक में निशचित पाया गया और सरमद को फिर फांसी दी गई ।

दूसरी बार फांसी के वक्त सरमद ने कहां ।

वि बारए बादि सवा पैयामे । हारि मन फितादह गिरयों ।। कि शाह दर मुलकि दौलत । मन मुलकि वेनवाई ।।

अर्थ:- ऐ वायु के देवता । परमात्मा तक यह समाचार पहुंचा दे कि मेरा गिरा हुआ सिर रो रहा है जब कि राजा धन के देश में डूबा हुवा है । मैं शीष रहित वैरान देश में घूम रहा हूं ।

बगदाद के कई सूफियों का आपके दर्शन को आना

कुछ समय के बाद बगदाद के कुछ सूफी औरंगज़ेब के दरबार में आये । वहां कुछ दिन बिता के वे राजा के कहने पर कश्मीर का भ्रमण करने के लिये यहां भी आ गए । राजा ने उनको कश्मीर में आप से मिलने के लिये भी कहा था इस प्रकार कश्मीर में आकर सूफी एक दिन आपके पास भी दर्शनों के लिऐ आए । काफी देर आप से बात चीत करते रहे । इतने में सूफियों को निमाज़ का समय आया तो वे आपकी कुटिया में प्रविष्ट कर निमाज़ पढ़न लगे । निमाज़ आरम्भ करते ही वहां विषैली मखियां पैदा हो गई और उन्होंने बुरी तरह काटना आरम्भ किया — निमाज़ पढना तो दूर रहा वे उसी समय भागने लगे । कुटिया से निकल कर आपके चरणों पर शीष झुकाया । कुछ वाद-विवाद के बाद आपने उनसे कहा कि यह संतो का गृह है ईश्वर का नहीं । इन दोनों में अन्तर है और आप लोग शौच रहित ही पढते हैं । इसी कारण से मखियां दण्ड देने के अभिप्राय से आई होंगी । आप लोग ज़ाहिद (धर्मात्मा) और सन्त में भेद नहीं कर सके

यह चमत्कार देखकर वे लज्जित हुए और कुछ दिनों के बाद दिल्ली लौटे । वहां पहुंच कर राजा को यह सारी कथा सुनाई । राजा तो स्वंय पहिले ही प्रभावित हो चुका था अब उनकी अपनी धार्मिकता का भांडा ही फूट गया और घमण्ड भी छूट गया । आखिर में जब सूफी लोग अपने देश को लौट गए तो उन्होंने वहां भी आप की आत्मशक्ति की काफी प्रशंसा की ।

एक तरखान के बेटे को " जीवन दान देना "

एक दिन आपके सेवकों ने आपकी कुटिया की मरम्मत कराने के लिए एक तरखान को काम पर लगाया । काम में हाथ बटाने के लिये तरखान अपने लडके को भी साथ ले आया था । मरम्मत का काम चल रहा था इसी के बीच तरखान का लडका गिर कर मर गया बहुत से मुसलमान इकत्रित हुए और शोर मचाने लगे । कुछ धार्मिक वैर भाव रखने वाले मुसलमानों ने आपको ही दोषी ठहराने का प्रयत्न किया परन्तु तरखान और उस की पत्नी ज़ार जार रोने लगी । इस पर आपको दया आगई । और आपने कहा कि शायद उसे बेहोशी छा गई हो । मरा नहीं होगा थोडी

गर्म चाय पिलाकर उसे आवाज़ मारो तो सही । फिर ऐसा ही किया गया और वह जीवित हुआ । उसके माता पिता अत्यन्त प्रसन्न हुऐ । उन्होंने उन लोगों की भी बुराई की जिन्होंने आप पर शंका प्रकट की थी । इस घटना से आपकी ख्याति में और वृध्दि हुई ।

" एक मुस्लमान स्त्री को पुत्र का वरदान "

एक मुस्लमान औरत कई वर्षों से बांझ हो चुकी थी उसे इस कारण काफी निराशा हुई थी । मनोरथ सिद्द करने के लिये वह कई संतों और फकीरों के पास भी जा चुकी थी । परन्तु कुछ प्राप्त न कर पाई । अन्त में जब उस ने आपकी बडाई भी सुन ली तो एक दिन आपके शरण आई । काफी विनती और प्रार्थना की आपने उसे चिल्म में आग रखने का संकेत किया । आज्ञा पालते पालते इस स्त्री की एक ऊंगली जल गई । किन्तु उसने लज्जा के कारण उफ तक न किया उपितु काफी धीरज से काम लिया । जब आपने यह सब देखा तो आप बडे प्रसन्न हुऐ, और स्त्री पर दया करके पुत्रवती होने का वरदान दिया । सन्तान प्राप्त होने पर वह काफी हर्षित हो जाती है और फिर आपकी सेवक भी बनगई ।

"नानशाह सेवक के माता का देहान्त और उसे फिर जीवनदान देना "

कुछ समय के बाद आपके सेवक नानशाह की माता की मृत्यु हुई । कि उसके घर में लंगर चलाने के लिये और कोई भी न था । और साथ ही नानशाह को आप पर द्रिढ विश्वास था । वह तुरन्त ही आपकी शरन में आया अैर सेवा भाव में सब हाल सुनाया उसकी प्रार्थना पर आप ने उत्तर दिया कि अपने समय पर मृत्यु होना अटल है । इस पर विलाप करना व्यर्थ है । परन्तु ईस उत्तर के मिलने पर भी नानशाह अपनी विनती पर स्थिर रहा अन्त में आपको दया आई । और कहा अच्छा तुम अपनी आयु के कितने वर्ष घटाना चाहते हो उतने ही वर्ष आपकी माता फिर जीवित रह सकती हैं । नानशाह ने तुरन्त उत्तर दिया चौदाह वर्ष फिर आप ने कहा कि घर जाकर उतने ही सिगाडि माता के शरीर से छू कर उनकी गिरियां खा जाओ फिर सेवक ने ऐसा ही किया । आप फिर स्वंय कुछ देर के लिये मौन हुए । कुछ मिनटों में उसकी माता उठ खडी हुई । नानशाह और दूसरे लोग यह देख कर चकित रह गए और प्रसन्न हुए । जनता में विशेषकर सेवकों में आपका प्रेम और विश्वास बडने लगा ।

त्रिसन्ध्या का स्नान

एक दिन आपके सेवकों ने त्रिसन्ध्या जाने की इच्छा प्रकट की विशेषकर उस समय जबकि दर्शन के दिन बीत चुके थ । आपने सेवकों की प्रार्थना स्वीकार की

और निश्चित समय पर चल पडे । जब रास्ते में आप सेवकों के साथ जा रहे थे । तो कुछ नटखट और उपद्रवी मुस्लमानों ने आपके चलने में रोड़े अटकाने का प्रयत्न किया । उनकी इस दुष्टता पर आपने रूष्ट होकर उनपर एसी दृष्टि डाली कि वे सभी अकड के रह गये । आप स्वयं सेवकों सहित आगे बढ़ते गये ।

दूसरे दिन त्रिसन्ध्या पहुंच कर वहां डेरा जमाया । दर्शन का समय बीत चुका था । चश्मा कई दिनों से सूखा पडा था । इसलिऐ सेवकों में कुछ निराशा छा गई । इस पर आपने उन से कहा कि मेरी लाठी ﴾ डंडा ﴿ चश्मे के भीतर घुमाऊँ और यह दोहा पढ लो ।

आपने फारसी कविता में यह शब्द कहे ।

चि कुदरत सुन्दह प्रारी राह न्यायद

व इस तिक वालि शाहन शाहि रेशी

यह शब्द कागज़ पर लिख दिये और चश्मे में डालने की आज्ञा दी सेवकों ने ऐसा ही किया और चश्मे से पानी बहने लगा । आपके सिवाय सभी सेवकों ने स्नान किया । स्नान करके फिर आपसे भी स्नान करने की प्रार्थना की । किन्तु आपने उत्तर दिया कि त्रिसन्ध्या के दरशन मेरे बुलाने पर हुये हैं । अतः मेरा स्नान करना उचित नहीं है इसके बाद आप आश्रम की और लौट पडे । रास्ते में वह नटखट मुस्लमान शरीर से उसी तरह अकडे पडे थे । सेवकों ने ययह देख कर आपसे उन पर दया करने की प्रार्थना की । आपने विनती स्वीकार की और उनपर फिर दृष्टि डाली । जिस से वे सभी ठीक हुए, और आपके चरनों पर गिर पडे । इस घटना के बाद वे सब ईश्वर भक्ति करने लगे ।

एक मुस्लमान स्त्री के घर निमन्त्रन

कश्मीर के सभी मुस्लमानों तथा हिन्दुओं को आप पर विश्वास और श्रद्धा उत्पान्न हुई थी । उसे प्रकट करने के लिए एक मुस्लमान स्त्री भी आप के सेवा में आई एक दिन उसने आपको अपने घर निमंत्रित किया । आपने यह निमंत्रन स्वीकार कर लिया जब आप वहां गए तो एक ब्राहमन देवता भी आपके साथ वहां चले । जब भोजन का कुछ भाग आप खा बैठे तो आपके साथ आये हुये ब्राहमन से प्रश्न किया कि हे ब्राहमन देवता आपने एक मुस्लमान के घर भोजन कैसे स्वीकार किया । ब्राहमन ने तुरन्त यह उत्तर दिया कि जब आप जैसे इतने बडे संत खाना खाने बैठे तो मेरा क्या दोष । आपने कहा कि यह सब शक्ति की बात है । वैसे तो मैं सब पेट साफ कर सकता हूं । आपने फिर अपनी ❀ अध्यात्मिक ' , शक्ति के बल से

शरीर के आन्तरिक अंग बाहर निकाल कर साफ करके दिखाये । आपकी यह आत्मशक्ति देखकर ब्राहमन बड़ा लज्जित हुआ । उसकी फिर शुद्धी कराई गई और उसने आगे अपने धर्म पर रहने का उपदेश दिया गया ।

" ज़हूरदीन देदमरी पर कृपा "

ज़हूरदीन नामक एक दुकानदार नवा कदल में रहता था । यह आपका सच्चा सेवक भी था । एक बार माल से भरी नौका ले कर चल रहा था तो सफाह कदल के निकट ऐसे ज़ोर की आंधी आई और नौका उल्ट कर सारा माल नदी में डूब गया । यह देख कर ज़हूरदीन पीटता पीटता आप की शरण में आया । और इस प्रकार विनती करने लगा कि यह भला कैसे आ गई जब कि आपका नाम मुश्किल आसान है । आपने मुस्कराते हुए उत्तर दिया कि घबराऊ नही पहिले तो तुम फिर किशती देखकर आआ । और देखलो कि आपके कहने में कितनी सच्चाई है । तदानुसार ज़हूरदीन चला गया और नदी के निकट पहुंच कर नाव को फिर ठीक हालत में देख पायां । वह फूले न समाया और हर्षित हो कर घर चला गया ।

" कशमीर के मंदल वंश के एक व्यकति क जीवन दान देना "

खरयार श्रीनगर में मन्दलो वंश का एक मनुष्य आपका सेवक हो गुज़रा है । कहा जाता है कि वह धनाढ्य मनुष्य था । उन दिनों ही देश में अकाल पडा था । हर एक अपनी अपनी जगह पर अतयन्त चिननितथा । ऐसे वातावरण में यह स्वाभाविक ही है कि ऐसे समय मे दैवी प्रकोप भी हुआ करते हैं और लोगों के मन में भी बुरे विचार और स्वपन आते हैं ।

इन दिनों ही इस मन्दलों नामक धनाढ्य को भी अर्धस्वपनावस्था में कोई भयानक मूर्ति प्रकट हुई और उसे घसीटने लगा । किन्तु निश्चित तुथ्य है कि ईश्वर भक्तों अथवा संत सेवकों पर इन घटनाओं का कोई प्रभाव नही पडता है अतः मन्दलों ने आप का शुभ नाम स्मरण किया आपका नाम लेकर ही तुंरूत उसने आपको सिहांसन पर विराजमान पाया । फिर आपसे इस प्रकार प्रार्थना की कि ऐ बादशाह हर दो जहां मैं इस भयानक अजदहा जैसे देवके हाथों में फँस पर पीडित हूँ इसलिये मेरी रक्षा करो । यह सुन कर आपने अपने सेवक नानकशाह को इस बात की खोज करने की आज्ञा दी ।

आदेशानुसार नानकशाह ने दोनों (देव और सेवक) को पकड कर आपके सामने उपस्थित किये आपने देव से पृश्न किया कि तुम मेरे सेवक के साथ इस प्रकार क्यों छेडते हो । क्या तुमहें अपना जीवन प्यारी नही है देव आपको देखकर एक दम भाग गया और मन्दलू नामी भी पीडा से छूट गया । इसी दिन से फिर कहत भी

समाप्त हुआ दूसरे दिन मन्दलू भेंट लेकर आपकी सेवा में उपस्थित हुआ और आप की कृपा पर धन्यवाद प्रकट किया । यूं तो आपके चम्तकार अनगणित हैं । किन्तु आजकल की महंगाई और समय की कमी के कारण सभी तें विस्तार से लिखने में असमर्थ हैं ।

" आपका अन्तरध्यान"

च्यूंकि आपकि अध्यातिमक शक्ति पर काष्टा पहुंच चुकी थी और दूरदर्शक भी आप काफी थे । इसलिये अपने अन्तरध्यान होने की चतावनी आपने सभी सैवकों को कुछ दिन पहले ही फारसी कविता शब्दों में दी ।

आपने फारसी कविता में यह सुनाया :-

रंजु व राहत चूं गुले रैणा व ज़ेबा दर नज़र ।
दर गुलिसतां ने जहां आदम वचशमे हर बशर ।
हर कि आदम दर जहां रफ्त अज़ जहां हम चू हुबाब जिन्दगानी अज़ हुबाब आमोखतह बावे शबाब ।।

अर्थ:- संसार में प्रत्येक का जीवत जलके बुल बुने अथवा नाज पुष्प के समान है । संसार के सुख और दुख : भी इसी फूल की तरह हैं । जो कि तुरन्त ही मुरझा जाता है । इसी प्रकार मनुष्य का जन्म और मृत्यु एक अबिवार कार्न है । इस कारण, से शरीर पर शूख करना बुद्धिमानी से बाहिर है । इसलिये हर आदमी को चाहिये कि वह अपना धर्म और कर्तव्य पहचान ले । लोक सेवा अपना सच्चा धर्म समझ कर करता रहे । श्री भगवत गीता में भी यही कहा गया है ।

गीता पर्माण उर्दू में :-

जो कोई आया जहां में उसका फनाह है लाजिमी ।
इस हुबावे जिन्दगी पर फिकिर करते हैं गवी ।।
अपने फरज़ेमन्सभी दो दिलसे तू अंजाम दे ।।
खिदमते खलके खुदा को सच्चा आदेश मान ले ।। लेखक

अर्थ:- आपने कई ढंग से अपने सेवकों को ढारस बन्धाया और अन्त में अपने जन्म दिन पर साठ 60 वर्ष की आयु में सैंकड़ू सेवकों से विदा हुए लेखक ने इस सम्बन्ध में यह शब्द कहे है ।

पंञ्चमी बैसाक के दिन मोस नो रोशन हुआ । दस गुना छः 60 वर्ष कर के आखर जन्म तिथ पर चल बसा ।।

अर्थ:-बैशाख कृष्ण पक्ष पंचमी के दिन जो कि आप का जन्म दिन था । ठीक इसी जन्म दिन पर आप स्वर्ग को सिधारे दहे शरीर त्याग करने की घडी तक आप

लोगों को उपदेश देते रहे और ओउम जपते जपते राम शरण हुए । अन्तरध्यान होने से पहिले कुछ सेवक यह पूछने पर विवश हुए कि आपके पास प्राय मुसलमान भी आया करते थे और विशेषता शासन भी मुसलमानों का था । इसलिये कहीं ऐसा न हो जाए कि वह आप के शरीर को दफ़न करने पर झगडा करें आपने उनकी शंका का फ... कविता में उत्तर दिया ।

अर्थः- ऐसा तुच्छ विचारें करना ठीक नहीं हैं इन कच्चीं बातों को छोड कर इस मृतक शरीर को धर्म शास्त्र रीति के अनुसार अग्नि भेंट करें मैं अब बाहरी ... को त्याग कर रहा हूं । और लोगों की दृष्टि से ओझल हो रहा हूं । आप ... रीति से कुछ कौडियां वितस्ता नदी में डाल कर यह घोषना करें कि "गया गया" और उसके बाद अपना काम करें । लोग इस तरफ दौड पडे इत्यादि यह कह कर आप अन्तरध्यान हुए । फिर सेवकों ने ऐसा ही किया और इस समय के बीच आपके पवित्र शरीर का अन्तिम संस्कार बटयार घाठ पर किया गया जहां आज कल छोटा सा मन्दिर खडा है जिस को जनता ने दान इकट्ठा करके बनवाया है । यह घाठ तीर्थ के समान है और यहां पर आपने माता जी को गंगा जी का दर्शन कराया था वहां प्रतिदिन पूजा पाठ हुआ करता है ।

आपके सुपुत्र रिहानन्द ने फिर वर्ष भर का क्रियाकर्म यथाविधि पूरा किया अन्त में उसे आपका शोक तथा वियोग सहन न हुआ और साधु बनकर भारत की यात्रा करने गया । इस यात्रा के बीच ही उसने शरीर त्याग भी किया । उसके दो सन्तान रहे । काशी पण्डित पीर तथा लाल पण्डित पीर काशी पण्डित भी साधू बनकर भारत की यात्रा पर चला । लाल पण्डित गृहस्ती था । उसका वंश अभी तक चला आ रहा है जिसकी संक्षिप्त वंशावली नीचे दी जाती है

श्री पीर पण्डित रेशिपीर

श्री रिहानन्द

श्री काशी पण्डित (साधु हुए) — श्री लाल पण्डित

श्री संसार चंद — श्री राधाकृष्ण — श्री कैलाश पीर

श्री आफताबराज़ — श्री मखन लाल

श्री श्याम लाल — श्री प्रेमानाथ — श्री बद्री नाथ — श्री नन्दलाल

श्री ओंकार नाथ पीर — श्री चमनलाल — श्री मोती लाल

-: शतश्रीय :-

यही लोग सब मिल कर आपका दिन मनाते हैं और मर्यादा के अनुसार कुल्चा तथा चावल से फूल ⁅ खाल प्रसाद के रूप में लोगों में बाँटते हैं । प्रेमी और श्रद्धा रखने वाले ⁅ 14 1/2 पैसे के हिसाब से चढावा चढाते हैं । चावल इत्या के रूप में दान भी भेंट करते हैं । कश्मीर के हिन्दु दूर दूर से इस दिन पर आपको श्रद्धान्जली भेंट करते हैं । इस दिन को यज्ञ भी रचाया जाता है । श्री पचंमी के नाम से प्रसिद्ध हुआ हैं ।

" आपका आश्रम "

यह पहिले एक कुटिया के रूप में था इस के बाद तिलक मुन्शी वंश के किसी पूर्वज ने एक मन्ज़िल आश्रम बनाया जिस में एक तरफ आपका निवास स्थान रखा है। उस पर आपकी खड़ावँ और कनटोप रखा गया है । दूसरे कमरे में साधारण जनता बैठती है। तब से काफी समय भीत गया किन्तु नकदी और जिनसी लेने वाले में किसी को गवारा न हुआ और अब तक भी न हो सका कि वह आश्रम में कुछ सुधार करे या कम से कम दूसरी मन्ज़िल ही बनवाये ।

मूर्ति पूजा के अनादर पर आपके सेवक का उतर

एक समय आपका एक विशेष सेवक नानशाह जो एक ज्ञानी और कवि भी था, हारी पर्वत की परिक्रमा को गया था । अभ्यास अनुसार एक स्थान पर उसने एक मूर्ति पर फूल चडाए इस पर कई मुस्लमान भाइयों ने आलोचन किया तो आपने फारसी के इस चौपाई में उन को उत्तर दिया ।

अर्थः- मूर्ति पूजक सदा तो जीवित नहीं रहता है । किन्तु जो मूर्तक शरीर अग्नि भेंट किया जाता है । वह इश्वर के दरबार में जाने योग्य होता है । तथा पत्थर के बोझ से छुटकारा पाता है । मूर्ति पूजा कोई दोष नही । इस के उपरान्त मुस्लमान अन्त में मरने के बाद पत्थर के बोझ के नीचे ही रहता है क्योंकि कब्र पर नकश किया हुआ पथर ही सदा उसपर सवार रहता है । किन्तु मूर्ति पूजक इस बोझ से पहले ही छुटकारा पाया हुआ होता हैं ।

यह उत्तर सूनकर आलोचक मुस्लमान भाई लज्जित होकर चूप हुए और नानशाह की प्रशंसा की । इसके बाद मूर्ति पूजा के सम्बन्ध में कुछ वाद विवाद भी होता है और निश्चत पाया जाता है कि हर एक धर्म का का आदि और अन्त मूर्ति पूजा ही है ।

=-=-= समाप्त =-=-=-=-= पन्नराज गन्जू



G. L. Ganju

"OM"

FOREWORD

The beautiful land of Kashmir is also known as a land of saints, mystics, poets and scholars. The world today is groping in the darkness of doubt and prejudice; restlessness prevails every where, intrigues and insincerity are common and the love and value of humanity has reached the freezing point. In this state, the world badly needs the message of human and divine love as given by innumerable saints and mystics of this valley. Lalded, Krishna Kar, Shri Kanth and host of others - amongst all of them the name of Sri Peer Pandit Paddshah, in reverence called Rishi Peer, Shines like the Polar Star.

The name of Rishi Peer, "mushkilkusha" is known to almost whole of Kashmiri Pandit Community, but his life and his teachings are known to only a few. To fill up this gap, we have endeavoured to publish this small volume. We hope ~~that it will at least partly~~ fulfil this need.

This book owes much to the thoughts, criticism and suggestions of many people.

A special acknowledgement is due to Mr. Vijay Langer, who has helped us in publishing this volume.

Hindu Yuva Sanghathan
Rishi Peer
Ali Kadal,
Srinagar.

"Maharaj Ganjoo"

***